



२५ एक चतुष्फलक अपने धरातलीय क्षेत्र के अनुसार
अनुपात आयतन धारण करता है।

इस सिद्धान्त के अनुसार यदि किसी गोलाकार पिण्ड को चारों ओर से समान दबाव के द्वारा दबाया जाय तो उसकी आकृति चतुष्फलक हो जायेगी -

ग्रेन की यह धारणा प्रसिद्ध वैज्ञानिक फेयरवर्न की इस शोध पर आधारित है कि यदि एक पदार्थ को चारों ओर से समान दबाव के द्वारा दबाया जाय तो उसकी आकृति त्रिभुजाकार हो जायेगी -

ग्रेन यह मानकर आते हैं कि पृथ्वी अपने जन्म से शीत, शीत, शीतल होती जा रही है। पृथ्वी शीतल होने पर उसका आन्तरिक भाग ब्राम्ह पटल की अपेक्षा की अधिक सिकुड़ गया। पृथ्वी के इस प्रकार सिकुड़ने से अपना आयतन कम हो गया। पृथ्वी की शीतल होने पर उसके ओर समान दबाव रहा जिसके फलस्वरूप गोलाकार पृथ्वी पिण्ड ने चतुष्फलक रूप धारण कर लिया।

वस्तुतः चतुष्फलक वह ठोस आकृति है जो चार समबिन्दु त्रिभुजों के मिलने से बनती है। यदि एक समबिन्दु त्रिभुज को आधार मानकर उसकी तीनों भुजाओं पर एक एक त्रिभुजों के करे और फिर इन तीनों के शीर्षों को एक साथ मिला दें तो उससे चतुष्फलक की आकृति बन जायेगी।

आलोचना →

यह सिद्धान्त बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसमें कुछ खामियां रह गयी हैं। जिसके कारण इसकी मान्यता घट गयी है। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथ्वी की परिभ्रमण गति इतनी अधिक है कि वह चतुष्फलक रूप कदापि धारण नहीं कर सकती है। और मूल्यतः ऐसी अवस्था में जबकि पृथ्वी की संरचना बड़ी ही जटिल है इसके अतिरिक्त एक शीर्ष बिन्दु पर भ्रमण करती हुई पृथ्वी का चतुष्फलक रूप में संकुचित रहना भी सम्भव नहीं है।

प्र० → वेगनर द्वारा प्रतिपादित महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त पर आलोचनात्मक विवरण लिखिए

30 → वेगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त बाद यद्यपि स्नाइडर ने सन् 1858 में और टेलर ने सन् 1908 में महाद्वीपीय विस्थापन के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये थे किन्तु महाद्वीपीय विस्थापन का स्पष्ट रूप देने का श्रेय वेगनर को है। वेगनर ने सर्व प्रथम 1912 में इस सिद्धान्त का प्रति पक्ष किया परन्तु सन् 1921 में जब उसका अंग्रेजी संस्करण निकाला तभी से सिद्धान्त वैज्ञानिक जगत में सबसे अधिक विवाद का विषय का हुआ है।